[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3615

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्रकृति चित्रण में रंगों का अद्भुत सामंजस्य–कलाकार रामकुमार

रीता शर्मा
शोध छात्रा
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग (कला संकाय), दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग़, आगरा

सारांश

मानव जीवन के साथ–साथ चित्रकला में वर्ण का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्ण मानव जीवन एंव चित्र का सार है जिस प्रकार कविता के लिये शब्द, संगीत के लिये लय तथा काव्य के लिये रस की आवश्यकता हाती है, उसी प्रकार चित्र के लिये रंग का होना अनिवार्य है। रंग के अभाव में चित्र नीरस है इसलिए आदिम गुहावासियों से लेकर आज तक कलाकार रंगों का आश्रय लेकर आत्माभिव्यक्ति करता आया है।

भारतीय चित्र षडंग में वर्ण–सामांजस्य को वर्णिका भंग नाम से सम्बोधित किया गया है। चित्र में रंगों की यथा सम्भव मिली–जुली भंगिमा वास्तव में वर्णिका भंग है। वस्तुओं में रंगों के माध्यम से ही चित्र के स्वभाव, वतावरण तथा अर्थ का ज्ञान होता है यही कारण है कि चित्र का वर्ण नियोजन करते हुये कलाकार या तो बाह्य यर्थाथ के समान रंगों का प्रयोग करता है या प्रतीकात्मक सादृश्य के आधार पर चित्रों की रचना करता है। यदि आज चित्रकला में रंगों का अध्ययन करे तो यह ज्ञात होता है कि कलाकार अपने अर्न्तमन के अनुरूप रंगों का प्रयोग करता है।

चित्रों में रंगों के साथ ऐसा ही क्रियात्मक प्रयोग चित्रकार रामकुमार के चित्रों में देखा जा सकता है। उनके द्वारा बनाये प्रकृति चित्रण मे रंगों एक अद्भुत समन्वय है। उनके अनुसार उदासी का वातावरण लाल रंग से भी दर्शाया जा सकता है वृक्षों का हरा होना आवश्यक नही है वह लाल भी हो सकता है। चित्रकार रामकुमार अपने स्वभाव के अनुरूप कोमल रंगों का प्रयोग करते है और धूमिल रंग लगाते हैं। वे रंगों का नियोजन अपनी मनःस्थिति के अनुरूप करते हैं फलस्वरूप चित्रों में प्रयोगधर्मिता का नवीन रूप विकसित हुआ है

प्रकृति चित्रण , माध्यम तैल, "278×182"

भारतीय सौन्दर्य दर्शन में रंगों के प्रतीकात्मक प्रयोग पर पूरा जोर दिया गया है। सफेद रंग शान्ति और सात्विकता का प्रतीक है तो लाल शौर्य और वीरता का और काला बुराइयों एवं मानसिक वृत्तियों का प्रतीक है। इसी प्रकार प्राचीन ईसाई एवं मध्यकालीन बाइजन्टाइन ईसाई कला में पीला रंग स्वर्ग का प्रतीक है। अंगूर की बेल को पुर्नजीवन का प्रतीक मानते है तथा मछली को पवित्रता का प्रतीक मानते है।

रामकुमार का नाम देश के उन मूर्धन्य कलाकारों में लिया जाता है जिन्होंने कला की विशिष्ट शैली का प्रतिपादन किया। कला की विधिवत प्रारम्भिक शिक्षा आपने नहीं ली। बी.ए. करने के उपरान्त तथा अर्थशास्त्र में एम.ए. करते हुए आपने शैलोज मुखर्जी के सानिध्य में शारदा स्कूल ऑफ आर्ट्स नई दिल्ली में सांयकालीन कक्षाओं में कला अध्ययन किया। पेरिस में भी कला की शिक्षा ग्रहण की। अहमदाबाद, शिमला, नई दिल्ली, मुम्बई, कोलकता, चेन्नई, पोलैण्ड, पेरिस, कोलम्बो, लन्दन आदि में एकल प्रदर्शनियों में भी भाग लिया। आपने राष्ट्रीय कला अकादमी, नई दिल्ली, विनाले यू.एस.ए. आदि सामूहिक प्रदर्शनियों में भी भाग लिया। आपको राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा पुरूस्कृत किया गया है तथा भारत सरकार द्वारा 1971 ई0 में पदमश्री, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कालिदास सम्मान, अमेरिका से जे0डी0 रॉकफेयर थर्ड फंड स्कॉलरशिप से भी सम्मानित किया गया। आपने ''दस भारतीय'' कलाकार प्रदर्शनी अमेरिका में आयोजित की। आपके चित्र नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट व ललित कला अकादमी नई दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ म्यूजियम, टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फण्डामेन्टल रिसर्च मुम्बई आदि में संगहीत होने के साथ ही नेशनल म्यूजियम बर्लिन व प्रॉग वांशिगटन, न्यूयॉर्क में भी सुरक्षित है।

शिमला में जन्मे रामकुमार एक निपुण लेखक होने के साथ ही पूर्णकालिक चित्रकार भी है तथा दोनों क्षेत्रों में पुरूस्कृत भी हुए हैं। आपका दृष्टिकोण स्वविकसित रहा है। आपके चित्रों में एक विशेष अन्दाज, आकृतियों को अंकित करने का निजी ढंग रंग व रूप की प्रतीकात्मक सज्जा विधमान है। आपके चित्रों में पिकासो, मातिस व ब्राक जैसे कलाकारों का प्रभाव भी स्पष्ट है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आपने तीन बार यूरोप व रूस का भ्रमण किया। यूनान की प्राचीन कला प्रणालियों को भी समझा व परखा है। इसके फलस्वरूप आपकी कलाशैली पर विभिन्न कलाओं का मिश्रित प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रारम्भ में आपके चित्रों में आकृतियाँ प्रधान हैं किन्तु 1960 के दशक में विभिन्न शैलियों का समन्वय कर चित्रों की रचना में विशेष योगदान दिया। जिसमें वाराणसी चित्रश्रृंखला अमूर्तता की ओर आकृष्ट करते हुए चित्रित किया है। शहरों में शहर बनारस आपकी कलात्मक अभिव्यक्तियों में एक विशेष स्थान रखता है जो कला साधना में आपके चित्रों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। शहर के स्थापत्य सौन्दर्य और असामान्य दृष्टिकोण से दूर लुप्त होती आशा के बीच में ज्ञान की धारा में प्रवाहित यह शहर एक मिसाल है। उत्सव व शोक के दृश्य, बनारस की सुंदरता और भव्यता के साथ तथा वास्तविकता को आत्मसात करते हुए चित्रों को राम कुमार ने अपने चित्रों में पेश किया गया है। यह चित्र श्रंखला दर्द और दुख की अर्न्तनिहित वास्तविकता की खोज है। बनारस के दृश्य प्रतीकवाद और रूपांकनो, दर्द और पीड़ा को उजागर करते हुए प्रतीत होते है। उनके बनारस लैण्ड स्केप 1936 तंग वस्तु रूपों, अंधेरे मौन रंगों अथवा घुटन के साथ शहर के एक आन्तरिक वातावरण को प्रस्तुत करते का है।

प्रकृति चित्रण , माध्यम तैल, "481×322"

आपने बनारस के बहुत से दृश्य चित्र बनाये। इन चित्रों में बनारस की वास्तुकला तथा छोटी–छोटी गलियाँ गंगा के घाट पर ले जाती हुई तथा उसके पश्चात विशाल रूप में परिवर्तित होती हुयी दिखाई गई हैं। इन चित्रों की मुख्य विशेषता कागज पर रंगों के स्थान पर काली स्याही के प्रयोग से बनाया गया हैं तथा इस काली स्याही के ऊपर उन्होंने मोमबत्ती से कुछ आकृतियों का भी चित्रण किया है कहीं कहीं चित्रों में काली स्याही पर मोमबत्ती का पिछला मोम भी उभर का दिखाई देता है जहाँ काली स्याही ने अपना मूलतः रंग बदल दिया है। इन चित्रों में ऐचिंग तथा लिथोग्राफी प्रक्रिया का अभास स्पष्टतः देखा जा सकता है जो चित्रों की मुख्य विशेषता हैं।

प्रकृति चित्रण , माध्यम इंक, बनारस घाट,"438×274"

चित्रकार रामकुमार ने प्रारम्भ में आकृति मूलक चित्राकृतियाँ बनाई। इसके पश्चात आप दृश्य चित्रण की ओर अग्रसार हुए। चित्रकार रामकुमार की आरम्भिक कला पर शहर की सामाजिक विकृति का स्पष्ट प्रभाव है। इनमें मध्य वर्ग की विवशता और निराशापूर्ण खमौशी की स्पष्ट छाप दिखलाई देती है।

प्रकृति चित्रण , माध्यम तैल,"636×466"

धनवाद से प्रेरित हो बनाये गये आपके चित्रों में त्रिभुज व वर्गों के द्वारा शहरी भवनों की भावहीन पृष्ठभूमि अत्यन्त रोचक प्रतीत होतें हैं। इन चित्रों में प्रयोग किये गये रंगो में उदास रंग भूरा, मटमैला कतथई, काला और कही–कही लाल, नीले तथा या पीले रंगों का प्रयोग, चित्र में करूणा की मनःस्थिति को उजागर करते हुए प्रतीकात्मक स्वरूप में प्रयोग किया गया हैं। आपके चित्रों में प्रयोग किये गये प्रतीक जैसे घूमती हुई गली, नंगेतार के खम्भे, खींच कर कसे हुए तार तथा पूर्ण निष्क्रिय वातावरण जैसे ठंड से जमा हुआ आदि विशेष रूप से आपने चित्रों में चित्रित है। कहीं–कहीं पृष्ठभूमि में कागज के मकान मानों गिरने वाले हैं जो शहरी समाज की आत्मघात की ओर बढ़ती प्रवृत्ति के सूचक हैं। बाद के चित्रों में आप उदासी के स्थान पर दुख का चित्रण करने लगे। रंगो के अध्यात्मिक स्वरूप की चमक को चित्रकार रामकुमार के आकृतिमूलक और अमूर्त दोनों ही चित्रकृतियों हम बार बार देखते हैं। रामकुमार की कलाकृतियों में रंगों के बदलते स्वरूप को देखा जा सकता है। वर्तमान में उनके चित्रों में चटख रंगो का प्रयोग भी देखा जा सकता है। लाल, नीले रंग अब रामकुमार

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

की कलाकृतियों में समन्वयात्मक रूप में प्रकट होते हैं। रामकुमार के अनुसार "रंगों के बस समय कोई बंधे–बंधाये अर्थ ही नहीं होते, लाल रंग भी उदास हो सकता है।" चित्रकार रामकुमार की कला में रंगों के अर्थ बदले तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने चित्रों में अपने मूल स्वभाव को ही बदल दिया है।

आपके चित्रों में रंग अत्यधिक सहजता पूर्वक होते हैं वह रंगो के साथ एक सहज सम्बन्ध बनाते रहे हैं। किसी रंग की संस्कृति से भी वह अपने घनिष्ठ सम्बन्ध बनाते हुए देखे जाते है। दृश्यकला में ख्यातिरत कलाकार रामकुमार के रंगों का एक गहरा सम्बन्ध गर्मियों से भी हैं। उनकी कई कहानियों और चित्रों के विषय वस्तु गर्मियाँ ही है। उनके चित्रों में प्रयोग किये गये रंग अधिकतर तपे हुए हैं। चित्रों में रगं छाया प्रकाश कई रूपों में बंधे हुए प्रयोग किये गये हैं।

प्रकृति चित्रण , माध्यम तैल, बनारस घाट,"320×237"

चित्रकार रामकुमार के चित्रों की विशेषता यह है कि उन्होंने सामाजिक जीवन के शहरों तथा मध्य वर्गों के परिवारों की आकृतियों दोनों का चित्रण किया है तथा उनके चेहरे पर विशाल बैचेनी व उदासीनता के चिन्हों को रंगो के करूणात्मक प्रयोग द्वारा चित्रित किया है। इन आकृतियों में स्वाभिमान की भावना परिलक्षित होती हैं और उनको देखकर प्रतीत होता है कि कठोर संघर्ष और मर्मपूर्ण जिन्दगी का सामना करते हुए भी वह निराश नहीं हुए हैं। आप आकृति मूलक था अमूर्त दोनों प्रकार की चित्रकला में प्रयोगवादी सिद्ध हुए हैं आपकी कलाकृत्तियों में आत्मिक चमक तथा नवीनता के प्रभावपूर्ण दर्शन होते हैं।

आपके द्वारा चित्रित दृश्य चित्रण में सबसे प्रमुख विशेषता भवनों का चित्रण है। वह तिकोने और चौकोर धन फलकों के रूप में है तथा स्पष्टतः देखने पर इन चित्रों में बहुत से रूपाकार देखने को मिलते हैं। पहाड़ के ऊपर से नीचे की ओर झांकते हुए कई घर, पुराना मंदिर तथा विभिन्न प्रकार की आकृतियां, मकानों की छज्जियाँ कहीं पर टीन शेड, कहीं पर झोपड़ी जैसी आकृति तथा पतली–पतली गलियाँ जो एक विशाल मैदान में निकलती हुई दिखाई देती हैं। अत्यधिक रोचकपूर्ण इन चित्रों में गहराई का समावेश है तथा आगे की पृष्ठभूमि को समतल बनाया गया है। ऐसा प्रतीत होता हैं कि किसी भीड़ वाले क्षेत्र से निकलकर खुले हुए वातावरण में उन्मुक्त पक्षी की तरह उड़ान भरने की भावना लेकर ऐसा चित्रण किया गया है, जो कलाकार रामकुमार के स्वभाव के अनुरूप माना जा सकता है। आज कलाकार अपनी अभिव्यक्तियों में जिस भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं पहले वे समाज के अराजक विरोधासाओं और आशचर्यजनक तत्वों को अपने व्यक्तित्व और कला में उतारने की कोशिश करते हैं और फिर सामाजिक वातावरण के साथ उसे समायोजित करते हैं। जिसके फलस्वरूप अन्ततः कृतियों का निर्माण होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ व पत्र–पत्रिकायें

1 *भारतीय कला का इतिहास, अविनाश बहादुर वर्मा, प्रकाश बुक डिपो,*
2 *भारद्वाज, विनोद –बृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, 2006*
3 *समकालीन कला, ममता चर्तुवेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर, 2008*
4 *www.aicongallery.com/artists/ram-kumar/bio/*